परिशिष्ट 2

(यीशु के दृष्टान्त)

यीशु के सारे दृष्टान्तों की सूची

इस निरीक्षण में 56 दृष्टान्त पाये जाते हैं। म. = मत्ती, मर. = मरकुस, लू. = लूका	L = 9-12 नियमावली में गिनती सबक के साथ S = 9-12 नियमावली में गिनती के साथ परिशिष्ट।

राज्य की नियमावली 9 (9x)

दृष्टान्तों का परिचय

1. **दृष्टान्त का अनुवाद करना** (S1)
   परिभाषा, उद्देश्य और दृष्टान्त की विशेषताएं।
   दृष्टान्त की व्याख्या करने का तरीका।

परमेश्वर के राज्य के स्वभाव के बारे में दृष्टान्त

2. **परमेश्वर के राज्य की स्थापना**
   सामर्थी व्यक्ति को बन्दी बना लेना (L1)
   म. 12:22-37, मर. 3:22-30,
   लू. 11:14-23

3. **परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर का वचन**
   बीज बोने वाला (L3)
   म. 13:3-23, मर. 4:3-20,
   लू. 8:4-15

4. **परमेश्वर के में राज्य परमेश्वर का संदेशवाहक**
   दुष्ट किसान (L5)
   म. 21:33-41, मर. 12:1-9,
   लू. 20:9-16

5. **परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोग**
   गेहूं के बीच जंगली बीज (L7)
   म. 13:24-30; 36-43

6. **परमेश्वर के राज्य की उन्नत्ति**
   गुप्त में बीज बढ़ रहे हैं (L9)
   मर. 4:26-29
   ख़मीर (L9)
   म. 13:33, लू. 13:20
   सरसों का बीज (L9)
   म. 13:31-32, मर. 4:30-32
   लू. 13:18-19

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश का दृष्टान्त

7. **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य**
   छुपा हुआ खज़ाना (L11)
   म. 21:28-32

राज्य की नियमावली 10 (19x)

8. **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्तें**
   सकरा मार्ग (S4)
   म. 7:13-14
   विवाह का स्थल (L15)
   म. 22:1-14
   महान जेवनार (S4)
   लू. 14:15-24

9. **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की ज़िम्मेदारी**
   बच्चें बाज़ारों में बैठे हुए हैं (S5)
   म. 11:16-19, लू. 7:31-35
   मौसम का संकेत (S5)
   म. 16:1-4, लू. 12:54-56
   दो पुत्र (L15)
   म. 21:28-32
   फलरहित अंजीर का वृक्ष (L15)
   लू. 13:1-9
   महाजाल (L15)
   म. 13:47-50

10. **परमेश्वर का स्वभाव उन लोगों के परमेश्वर के प्रति जो राज्य मे खोऐ हैं।**
    खोई हुई भेड़ (S6)
    म. 18:12-14
    खोई हुई भेड़ (L17)
    लू. 15:1-7
    खोया हुआ सिक्का (S6)
    लू. 15:8-10
    खोया हुआ बेटा (L17)
    लू. 15:11-32

परमेश्वर के राज्य में जीवित रहने के बारे में दृष्टान्त

11. **परमेश्वर के राज्य में प्रत्येक्ष प्रेम।**
    अशुद्ध आत्मा का लौट जाना (S7)
    म. 12:43-45, लू. 11:24-26
    दो कर्ज़दार (S7)
    लू. 7:40-50
    भला सामरी (L9)
    लू. 10:29-37

12. **परमेश्वर के राज्य में नम्रता**
    आरक्षित स्थान (L21)
    लू. 14:7-14
    फरीसी और चुंगी लेनेवाले (L21)
    लू. 18:9-14

13. **परमेश्वर के राज्य में क्षमा**
    प्रतिवादी (S8)
    म. 5:25-26
    निर्दयी सेवक (L23)
    म. 18:23-35

राज्य की नियमावली 11 (18x)

14. **परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता।**
    अन्धा अन्धे की अगुवाई कर रहा है (L25)
    म. 15:1-20, लू. 6:39-42
    बुद्धिमान और मुर्ख घर बनाने वाला (L25)
    म. 7:24-27, लू. 6:47-49

15. **परमेश्वर के राज्य में उपवास।**
    दूल्हा, पैवंद और मशक (L27)
    म. 9:14-17, मर. 2:18-22,
    लू. 5:33-39

16. **परमेश्वर के राज्य में निरन्तर प्रार्थना।**
    माँगने वाला पुत्र (S9)
    म. 7:7-11, लू 11:9-13
    मध्यस्थता करने वाला मित्र (L29)
    लू. 11:5-10
    निरन्तरता की विधवा (L29)
    लू. 18:1-8

17. **परमेश्वर के राज्य में गवाही देना**
    वैद्य और बीमार (L31)
    म. 9:9-13, मर. 2:13-17, लू. 5:27-32
    पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति (L31)
    म. 5:13-16

गृहस्वामी (S10)

म. 13:51-52

मज़दूर और कटनी (S10)

म. 9:35-38

18. <u>परमेश्वर के राज्य में चेला बनना</u>

उतावली में बनानेवाला (L33)

लू. 14:28-30

लापरवाह राजा (L33)

लू. 14:31-33

हल के ऊपर हाथ रखने वाला (S11)

लू. 9:61-62

19. <u>परमेश्वर के राज्य में संसारिक सम्पत्ति</u>

धनी मूर्ख (L35)

लू. 12:13-21

अमीर का दिखावा और भिखारी लाज़र (L35)

लू. 16:19-31

<u>परमेश्वर के राज्य में सेवा करने के बारे में दृष्टान्त</u>

राज्य की नियमावली 12 (10x)

20. <u>परमेश्वर के राज्य में भण्डारीपन</u>

चलाक प्रबन्धक (L37)

लू. 16:1-13

21. <u>परमेश्वर के राज्य में सेवा</u>

अयोग्य दास (L39)

लू. 17:7-10

विश्वासयोग्य दास और दृष्ट दास (S14)

म. 24:45-51, लू. 12:42-46

22. <u>परमेश्वर के राज्य में प्रतिफल</u>

दाख की बारी में काम करने वाले (L41)

म. 20:1-16

तोड़े (L43)

म. 25:14-30

दस मुहरें (S15)

लू. 19:11-27

23. <u>परमेश्वर के राज्य में सावधानी</u>

फलरहित अंजीर का पेड़ (S16)

म. 24:32-35

दस कुँवारियाँ (L45)

म. 25:1-13

सावधान सेवक (S16)

लू. 12:35-40

24. <u>परमेश्वर के राज्य में न्याय</u>

भेड़ें और बकरियां (L47)

म. 25:31-46